

# डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 19, अमेरिका में सामाजिक सुसमाचार

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 19 है, अमेरिका में सामाजिक सुसमाचार।

आज एक ऐसे व्यक्ति द्वारा दिया गया संक्षिप्त भक्तिपूर्ण प्रवचन, जिससे आप परिचित हो सकते हैं या नहीं भी।

आपने उनके बारे में पढ़ा होगा, लेकिन उनका नाम एफ.डी. मौरिस है। अब, एफ.डी. मौरिस इंग्लैंड में वही कर रहे थे जो रॉशनबुश जैसे लोग अमेरिका में सामाजिक सुसमाचार आंदोलन में कुछ समय बाद कर रहे थे। और एफ.डी. मौरिस, आज ही के दिन, 1 अप्रैल को, यह उनकी तारीख थी, जब वे 1872 में प्रभु के पास चले गए।

तो, यह एफडी मौरिस को याद करने का दिन है। उनका पालन-पोषण एक यूनिटेरियन घर में हुआ था, लेकिन उन्हें यह बहुत परेशान करने वाला लगा। और इसलिए, वे चर्च ऑफ इंग्लैंड बन गए और वास्तव में चर्च ऑफ इंग्लैंड में नियुक्त हुए।

और फिर, वह अपने जीवन के बाकी समय में गरीबों की देखभाल करने के लिए चिंतित रहे। यीशु मसीह के जुनून और मृत्यु के अर्थ के बारे में उन्होंने जो कहा, वह यहाँ दिया गया है। उन्होंने कहा कि मुझे नहीं लगता कि हम जुनून सप्ताह के बारे में बिल्कुल भी भिन्न हैं।

यह आत्मसाक्षात्कार का हिंसक प्रयास है, जैसा कि इसे कहा जाता है, जो मुझे लगता है कि निराशाजनक और शरारती है। इसे प्राप्त करने के प्रलोभन का उपाय बस शांत, सरल मान्यता है कि मसीह हमारे दुखों और हम सभी के दुखों में प्रवेश कर रहे हैं। यह वास्तविक है।

यह इस बात की कल्पना करने की कोशिश नहीं है कि वह अपने दुखों में किस तरह से गुजरा होगा, बल्कि यह है कि हमने जो अनुभव किया है, उसके आधार पर यह अनुमान लगाया जा रहा है कि उसने अपने दुखों में क्या-क्या झेला होगा। तो, एक शब्द, एफ.डी. मौरिस। कुछ साल पहले आज ही के दिन, 1 अप्रैल को उनकी मृत्यु हो गई थी।

ठीक है। व्याख्यान में हमें कहाँ होना चाहिए, हम अमेरिका में उदार धर्मशास्त्र और इसके लिए तीन रणनीतियों के बारे में हैं; बस एक अनुस्मारक, हमने एक परिचय दिया और फिर ईसाई धर्म को बचाने के लिए तीन रणनीतियाँ दीं। तो, याद रखें कि हमने व्याख्यान में क्या बात की थी? प्रोटेस्टेंट ईसाई धर्म को लगा कि अमेरिका में ईसाई धर्म काफी हद तक विघटित हो रहा है और यह काफी हद तक वैसा नहीं है जैसा होना चाहिए और इसमें वह ताकत नहीं है जो पहले थी।

तो, ईसाई धर्म को बचाने के लिए विभिन्न प्रोटेस्टेंट प्रचारकों, शिक्षकों, नेताओं और लेखकों ने तीन रणनीतियाँ विकसित कीं। और पहली रणनीति थी ऐतिहासिक प्रक्रिया को देवता बनाना। दूसरे शब्दों में, बाइबल को एक सैद्धांतिक पुस्तक के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए।

इसे एक ऐतिहासिक पुस्तक के रूप में लिया जाना चाहिए, और आपको यह समझना चाहिए। यही बात बाइबल और ईसाई जीवन के बारे में सबसे महत्वपूर्ण है। यह नंबर एक है।

दूसरा, नैतिकता पर जोर देना। जीवन, सिद्धांत नहीं। तो, सिद्धांत तो खत्म हो गया, लेकिन आप अपना जीवन कैसे जीते हैं, खास तौर पर यीशु के अनुसार? यह महत्वपूर्ण है।

और फिर धार्मिक भावना की निश्चितता और सिद्धांत नहीं, हठधर्मिता नहीं, बल्कि धार्मिक भावना। धार्मिक भावना क्या है? और यही वास्तव में ईसाई धर्म है। अगर हम लोगों को ईश्वर का कुछ अनुभव करा सकें, तो हमें ईसाई धर्म का सार मिल जाएगा।

इसकी शुरुआत फ्रेडरिक श्लेयरमाकर से हुई, जिनका हमने जिक्र किया है। तो, यह श्लेयरमाकर ही थे जिन्होंने यूरोप में यह सब शुरू किया, फिर यह अमेरिका में आया। लेकिन इस सब में उनकी धार्मिक भावना बहुत महत्वपूर्ण है।

तो, श्लेयरमाकर ने किस व्यक्ति का उदाहरण दिया जिसने पूरी तरह से ईश्वर पर भरोसा किया और ईश्वर का अनुभव किया? बेशक, वह यीशु होगा। वह इसका एक महान आदर्श और एक महान उदाहरण बन गया है। तो ये तीन रणनीतियाँ हैं।

क्या वे कामयाब हुए? खैर, समय ही बताएगा, लेकिन आइए देखें कि 20वीं सदी में प्रोटेस्टेंटवाद के साथ क्या होता है। क्या उन तीन रणनीतियों के बारे में कोई सवाल है? हम समझते हैं कि वे जो करने की कोशिश कर रहे हैं, वह क्यों कर रहे हैं, और हम समझते हैं कि उन्होंने ईसाई धर्म को बचाने के लिए इन धार्मिक प्रकार की रणनीतियों को क्यों विकसित किया। ठीक है, क्या हम इसके लिए तैयार हैं? बढ़िया।

तो, अब हम आगे बढ़ते हैं। आप पृष्ठ 15 पर देख सकते हैं कि अब दो युद्ध रेखाएँ खींची गई हैं, और ये युद्ध रेखाएँ यह निर्धारित करेंगी कि 20वीं सदी में ईसाई धर्म का स्वरूप क्या होगा और फिर युद्ध रेखाओं के संदर्भ में कौन किसकी तरफ होगा। सबसे पहले, मैं डार्विनवाद के महत्व पर चर्चा करूँगा।

डार्विनवाद ने 1859 में ओरिजिन ऑफ स्पेशीज प्रकाशित की। इसलिए डार्विन इस तरह की कहानी के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, और उन्होंने विकास का एक सिद्धांत विकसित किया। अब, उन्होंने प्राकृतिक चयन द्वारा विकास का एक सिद्धांत विकसित किया।

तो, डार्विनवाद के साथ जो होने जा रहा है वह यह है कि इसकी दो तरफ से आलोचना की जाएगी। तो, चलिए बस एक मिनट के लिए अपने पक्ष को खंगालते हैं। इसकी आलोचना ईसाई धर्म के अधिक उदार पक्ष से की जाएगी जिसका हमने अध्ययन किया है, और इसकी आलोचना

ईसाई धर्म के अधिक इंजील पक्ष से की जाएगी जिसका हमने अध्ययन किया है या जब हम 20वीं सदी में प्रवेश करेंगे तो आगे देखेंगे।

तो, सबसे पहले, आइए हम एक मिनट के लिए अपने विचारों पर ध्यान दें। डार्विनवाद की आलोचना अधिक उदारवादी पक्ष से की जाएगी, विशेष रूप से देववाद से। देववाद द्वारा इसकी आलोचना क्यों की जाएगी? देववाद और उनके धर्मशास्त्र के बारे में ऐसा क्या था कि वे नीचे से प्रजातियों की उत्पत्ति और डार्विन के विकास के सिद्धांत की आलोचना करेंगे? देववाद क्या सिखाता है जो इसकी आलोचना करेगा, जो उसके बाद आएगा? कुछ भी? यहाँ एक तरह से पहिए घूम रहे हैं।

मैं इसे दूसरे तरीके से कहूँ तो, देववाद ने दुनिया के निर्माण को कैसे समझा? उन्होंने कैसे समझा कि हम यहाँ कैसे पहुँचे? या उन्होंने किस धर्मशास्त्र का उपयोग किया? हाँ, मैथ्यू? ठीक है। तो, देववाद का अर्थ है कि ईश्वर घड़ी बनाने वाला ईश्वर है, और उसने घड़ी को घुमाया, उसने इसे चालू किया। लेकिन यह ऊपर से सृष्टि है।

भगवान ने ही इसे बनाया है। हम किसी तरह के प्राकृतिक चयन से विकसित नहीं हुए हैं, आप जानते हैं, कि मजबूत जीतता है, कमजोर जीतता है। हम इस तरह से यहां नहीं पहुँचे हैं।

हम यहाँ एक ईश्वर के द्वारा आए हैं जिसने अपने वचन की शक्ति से दुनिया का निर्माण किया है। और आप कहेंगे, अगर आपके पास यह लेबल नहीं है, तो आपको यह लेबल नीचे रख देना चाहिए। उनके पास प्राकृतिक धर्मशास्त्र का धर्मशास्त्र था।

देववाद के भीतर एक प्राकृतिक धर्मशास्त्र अंतर्निहित था। और उस प्राकृतिक धर्मशास्त्र ने दुनिया को देखा। क्या उन्होंने इसे बदसूरत या सुंदर देखा? उन्होंने दुनिया को सुंदर के रूप में देखा। उन्होंने दुनिया को ईश्वर, निर्माता द्वारा डिज़ाइन किया हुआ देखा।

इसलिए, उन्होंने दुनिया को नीचे से किसी तरह के विकास के रूप में नहीं देखा। इसलिए, वास्तव में ईश्वरवाद, और अधिक उदार प्रोटेस्टेंट वास्तव में डार्विनवाद को खोज लेंगे, वे वास्तव में डार्विनवाद की आलोचना करेंगे। ठीक है, अब, इंजीलवाद में, इंजील के लोग, जो लोग अधिक दाईं ओर हैं, और जो लोग अधिक रूढ़िवादी हैं, उनकी डार्विनवाद की आलोचना क्या होगी? डार्विनवाद के बारे में उनके पास कहने के लिए किस तरह की बात होगी? उनका धर्मशास्त्र क्या होगा जिसका उपयोग वे डार्विनवाद की आलोचना करने के लिए करेंगे? हाँ, वे बाइबल और सात-दिवसीय सृष्टि का उपयोग करेंगे क्योंकि इसी तरह से दुनिया का निर्माण हुआ था।

यह नीचे से नहीं, बल्कि ऊपर से है। लेकिन जबकि देववादी लोग डार्विनवाद पर हमला करने के लिए प्राकृतिक धर्मशास्त्र का उपयोग करते हैं, वहीं इंजीलवादी या जो लोग अधिक रूढ़िवादी हैं, वे एक तरह के प्रकट धर्मशास्त्र का उपयोग करेंगे। परमेश्वर ने अपने वचन में, बाइबल में, हमें बताया है कि दुनिया कैसे बनाई गई।

और उत्पत्ति में शुरू से ही यह बात हमारे सामने है। इसलिए, जब विकास के सिद्धांत की बात आती है तो डार्विनवाद की दोनों तरफ से आलोचना की जाएगी। अब, इस तरह की लड़ाई में उतरना एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है, और उसका नाम चार्ल्स हॉज है।

और चार्ल्स हॉज वास्तव में बाइबिल के दृष्टिकोण से हैं। चार्ल्स हॉज ने वास्तव में डार्विनवाद को एक पुस्तक के साथ चुनौती दी जिसका नाम है डार्विनवाद क्या है? डार्विनवाद क्या है? अब, चार्ल्स हॉज का नाम महत्वपूर्ण है, लेकिन यह भी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने कहाँ पढ़ाया और उनका प्रभाव कहाँ था। वह प्रिंसटन थियोलॉजिकल सेमिनरी में शिक्षक थे। और आप चार्ल्स हॉज की तिथियाँ देख सकते हैं।

तो मूल रूप से, वह 19वीं सदी के प्रिंसटन थियोलॉजिकल सेमिनरी में है। ठीक है, यह महत्वपूर्ण क्यों है? यह महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रिंसटन और मैं यह सिर्फ इसलिए नहीं कह रहा हूँ क्योंकि मैंने प्रिंसटन से डिग्री प्राप्त की है, लेकिन प्रिंसटन अमेरिका में सेमिनरी के मामले में रूढ़िवाद का गढ़ था। प्रिंसटन एक महान सेमिनरी थी जिसने अमेरिका में रूढ़िवाद को बनाए रखा।

तो, जिसे प्रिंसटन धर्मशास्त्र कहा जाता है, वह वास्तव में धर्मशास्त्र है जो 19वीं शताब्दी में अमेरिकी प्रोटेस्टेंट जीवन पर हावी था। तो, यह हॉज है, और यह प्रिंसटन से बोल रहा है, और वह डार्विनवाद को चुनौती दे रहा है और कह रहा है, डार्विनवाद क्या है? ठीक है, तो पुस्तक में डार्विनवाद क्या है? इस सवाल का उनका मूल उत्तर क्या है? उनका मूल उत्तर यह है कि डार्विनवाद नास्तिकता है। तो, हॉज ने कहा कि आप ईसाई नहीं हो सकते और डार्विनवाद में विश्वास नहीं कर सकते।

ऐसा करना असंभव होगा क्योंकि डार्विनवाद नास्तिकता है। इसलिए, उन्होंने वास्तव में चुनौती स्वीकार की। हम कहते हैं कि युद्ध की रेखाएँ यहाँ खींची गई हैं।

उन्होंने वास्तव में डार्विनवाद की चुनौती को स्वीकार किया और उस बिंदु पर डार्विन के खिलाफ वास्तव में एक बहुत मजबूत जवाब दिया। अब, मुझे बस इतना कहना है, लेकिन ऐसे अन्य धर्मशास्त्री भी थे जिन्होंने बीच का रास्ता अपनाने की कोशिश की। तो ऐसे धर्मशास्त्री थे जो एक तरह के ईश्वरवादी विकास में विश्वास करते थे और मानते थे कि भगवान ने सृष्टि की, लेकिन उन्होंने विकास के द्वारा सृष्टि करने का फैसला किया।

इसलिए, उन्होंने बीच का रास्ता अपनाया, लेकिन उनके पास हॉज या प्रिंसटन थियोलॉजी जैसी आवाज़ नहीं थी। और इसलिए यह डार्विनवाद का एक बहुत ही महत्वपूर्ण उत्तर है जो हमें हॉज और उनकी पुस्तक, डार्विनवाद क्या है? से मिलता है। सिर्फ इसलिए कि यह उस मामले में धार्मिक रूप से रूढ़िवादी था, क्या इसने रूढ़िवाद को परिभाषित किया? ठीक है। इसने परिभाषित किया कि यह एक तरह से परिभाषित है, धार्मिक रूप से परिभाषित है कि रूढ़िवाद क्या है, ईसाई, प्रोटेस्टेंट रूढ़िवाद क्या है।

ये लोग प्रिंसटन में सिर्फ उपदेशक या शिक्षक ही नहीं थे; वे लेखक भी थे। इसलिए, उनकी सामग्री आम जनता और दूसरे ईसाइयों तक पहुँची, और इसी तरह। इसलिए वे 19वीं सदी में एक

शक्तिशाली व्यक्ति थे, जो प्रोटेस्टेंट रूढ़िवाद को विकसित करने या प्रोटेस्टेंट रूढ़िवाद पर अपनी पकड़ बनाए रखने में माहिर थे।

ठीक है। तो, युद्ध की रेखाएँ खींच दी गई हैं। पहली युद्ध रेखा डार्विनवाद थी, और वह खींच दी गई है।

दूसरी लड़ाई, बेशक, बाइबल के लिए लड़ाई है। और हमने इसे आपकी रूपरेखा में दूसरे नंबर पर रखा है। बाइबल के लिए लड़ाई।

ठीक है। बाइबल के लिए लड़ाई सुधार के दौरान शुरू हुई। तो बाइबल के लिए लड़ाई सुधार की तरह युद्ध के नारे, सोला स्क्रिप्टुरा से शुरू होती है।

और सोला स्क्रिप्टुरा परंपरा और बाइबिल से सिद्धांत विकसित करने की रोमन कैथोलिक समझ के खिलाफ एक युद्धघोष है। इसलिए, मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक दुनिया में, सिद्धांत परंपरा से और बाइबिल के पाठ से भी विकसित होता है, लेकिन आपको सिद्धांत को परिभाषित करने के लिए बाइबिल के पाठ की आवश्यकता नहीं है। इसलिए, सुधारक आए, लूथर और केल्विन जैसे लोग, और वे इस सोला स्क्रिप्टुरा युद्धघोष के साथ आए, केवल शास्त्रों के साथ।

और केवल धर्मग्रंथों से उनका तात्पर्य मुख्य रूप से धर्मशास्त्र के विकास के लिए केवल धर्मग्रंथों से था, सोला स्क्रिप्टुरा। ठीक है। तो, अब जो होता है वह युद्ध की रेखा है, बाइबल के लिए लड़ाई, जो होता है वह यह है कि बाइबल अब 19वीं सदी में हमले के अंतर्गत आती है।

बाइबल की वैधता या अधिकार को नकारने वाले बहुत से लोग हैं। 18वीं सदी में देववादियों जैसे लोगों द्वारा और फिर 19वीं सदी में यूनिटेरियन और इसी तरह के अन्य लोगों द्वारा इस पर हमला किया गया था। इसलिए, इस पर हमला किया जाता है।

तो, ऐसे लोग हैं जो बाइबल का बचाव कर रहे हैं, और वे बाइबल का बचाव कर रहे हैं, कह रहे हैं कि बाइबल में कोई त्रुटि नहीं है। तो, उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक कोई त्रुटि नहीं है। ठीक है।

अब, कुछ बचावकर्ताओं के लिए, उनका मतलब था कि कोई त्रुटि नहीं थी, बस। बचावकर्ताओं में से अन्य के लिए, उनका मतलब था कि पाठ के संदर्भ में यहाँ या वहाँ कोई दुर्घटना हो सकती है, लेकिन उत्पत्ति से रहस्योद्घाटन तक सिद्धांत के संदर्भ में कोई त्रुटि नहीं थी। इसलिए, ऐसे लोग होने जा रहे हैं जो बाइबल की आलोचना के खिलाफ शास्त्रों का बचाव करने जा रहे हैं जो उभर रही थी और इतनी शक्तिशाली बन रही थी।

ठीक है। मैं इनमें से दो डिफेंडरों का जिक्र करना चाहूँगा। सबसे पहले, हम आर्चीबाल्ड एलेक्ज़ेंडर हॉज का जिक्र करेंगे।

ओह, वैसे, यह श्लेयरमाकर है, यह तस्वीर, जैसा कि हमने दूसरे दिन बताया था। लेकिन हमने आर्चीबाल्ड अलेक्जेंडर हॉज का उल्लेख किया था। ओह, ऐसा लगता है कि वह चार्ल्स हॉज से संबंधित हो सकता है।

और इसलिए वह बेटा था। और फिर हमारे पास बेंजामिन वारफील्ड है। ठीक है।

तो, अगर आप हॉज और वॉरफील्ड की तारीखों को देखें, तो वे थोड़ी बहुत ओवरलैप करती हैं, एक तरह से थोड़े समय के लिए। फिर हॉज की मृत्यु 86 में हुई, और फिर वॉरफील्ड 1921 तक जीवित रहे। ठीक है।

आपको क्या लगता है कि ये दोनों लोग कहाँ पढ़ाते हैं? बेशक, प्रिंसटन थियोलॉजिकल सेमिनरी। तो, प्रिंसटन अभी भी आर्चीबाल्ड अलेक्जेंडर हॉज और फिर बेंजामिन वारफील्ड, बीबी वारफील्ड के तहत रूढ़िवाद का चैंपियन है। इसलिए, वे प्रिंसटन थियोलॉजी विकसित कर रहे हैं, जो वास्तविक रूढ़िवाद का धर्मशास्त्र है।

और फिर वे जो कर रहे हैं वह बाइबल की अचूकता के सिद्धांत का बचाव करना है। बाइबल जो सिखाती है उसमें अचूकता है। यह बिना किसी त्रुटि के सिखाती है।

और हम बाइबल की आलोचना के सभी हमलों के खिलाफ बाइबल का बचाव करने जा रहे हैं। हमें लगता है कि यह इसके लायक है; यह एक तरह से हमारा सोला स्क्रिप्टुरा दिवस है। ठीक है।

इस सब के साथ जो होता है वो ये कि आपको चार्ल्स ए. ब्रिग्स नाम का एक व्यक्ति मिलता है। और वो इस कहानी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, चार्ल्स ब्रिग्स। ठीक है।

चार्ल्स ब्रिग्स एक प्रेस्बिटेरियन थे जो न्यूयॉर्क शहर में एक प्रेस्बिटेरियन सेमिनरी में पढ़ाते थे। तो शायद यह एक सेमिनरी है। निश्चित रूप से, हमने इसका उल्लेख नहीं किया है, मुझे नहीं लगता। लेकिन क्या कोई यह अनुमान लगाना चाहता है कि न्यूयॉर्क शहर में इस प्रेस्बिटेरियन सेमिनरी का नाम क्या था? कोई? नहीं? बिल्कुल नहीं।

यूनियन। इसका नाम न्यूयॉर्क शहर में यूनियन थियोलॉजिकल सेमिनरी रखा गया। वह यूनियन में शिक्षक थे।

अब, मैं ब्रिग्स के बचाव में कहूँगा, शायद उन्हें इसकी ज़रूरत नहीं है, उन्हें निश्चित रूप से मेरे बचाव की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैं उनके बचाव में कहूँगा कि जब वे यूनियन में बाइबिल अध्ययन पढ़ा रहे थे, तो उन्हें लगा कि बाइबिल में कुछ गलतियाँ हैं। लेकिन उन्हें लगा कि वे गलतियाँ बहुत छोटी थीं। उन्हें लगा कि वे गलतियाँ, आज, टाइपोलॉजिकल गलतियाँ थीं।

इसलिए, उन्हें नहीं लगता था कि उन गलतियों ने बाइबल के सिद्धांत को वास्तव में प्रभावित किया है। इसलिए, मुझे ब्रिग्स के बचाव में यह कहना होगा। हालाँकि, ऐसे लोग भी थे जो उनकी शिक्षाओं से बहुत घबराए हुए थे क्योंकि ऐसा लग रहा था कि वे बाइबल के पाठ को कमज़ोर कर रहे थे।

और इसलिए, ऐसा लग रहा था कि वह बाइबल के पाठ को त्रुटिहीन मानकर नहीं चल रहा था। और इसलिए चार्ल्स ब्रिग्स पर मुकदमा चलाया गया, और इसे ब्रिग्स केस कहा जाता है। उन्हें प्रेस्बिटेरियन चर्च में कुछ ऐसा सिखाने के लिए मुकदमा चलाया गया जो बाइबल में नहीं था, ऐसी बातें सिखाना जो बाइबल में नहीं थी, कुछ मायनों में त्रुटिपूर्ण नहीं थी।

इसलिए, उस पर मुकदमा चलाया गया और उसे इस मामले में दोषी पाया गया। और उन्हें डर था कि उसने बाइबल में गलतियों के बारे में बात करके थोड़ा ज़्यादा ही दरवाज़ा खोल दिया है। इसलिए, इसके परिणामस्वरूप जो हुआ वह विभाजन था।

ब्रिग्स ने यूनियन थियोलॉजिकल सेमिनरी छोड़ दी, अपना संप्रदाय छोड़ दिया, और प्रेस्बिटेरियन चर्च छोड़ दिया, लेकिन सेमिनरी ने प्रेस्बिटेरियन चर्च को भी छोड़ने का फैसला किया। इसलिए, ब्रिग्स केस और ब्रिग्स ट्रायल के समय से सेमिनरी एक स्वतंत्र सेमिनरी बन गई, जो आज भी है। यह प्रेस्बिटेरियन चर्च द्वारा समर्थित नहीं है।

तो, लेकिन अब यह एक महत्वपूर्ण सेमिनरी है जिसे 20वीं सदी में हम जिस बारे में बात करेंगे, उसके संदर्भ में याद रखना चाहिए। तो अब हमारे दिमाग में यूनियन थियोलॉजिकल सेमिनरी है, हम इसे याद रखना चाहते हैं, ताकि आगे जो भी हो। तो, ठीक है।

तो, ब्रिग्स ट्रायल या ब्रिग्स केस ने कई अन्य मुकदमों का रास्ता खोल दिया है। तो, सेमिनारियों और चर्चों में कई अन्य मुकदमे और मामले चल रहे हैं। और इसलिए, बाइबल की अचूकता के सिद्धांत पर बड़े-बड़े मतभेद हो रहे हैं, न केवल पादरियों और शिक्षकों के साथ बल्कि सेमिनारियों के साथ भी।

अब, यहाँ क्या होता है? मुझे याद है कि हन्ना ने पूछा था। हमने दूसरे दिन इस बारे में बात की थी, और मैं, लड़के, काश मुझे इसका उत्तर पता होता, और मुझे नहीं पता; मैं यहाँ खुद इस पर थोड़ा सोचने जा रहा हूँ। और आप में से कुछ लोगों को इस पर सोचने में मेरी मदद करनी चाहिए। लेकिन जो होता है, वह यह है कि, सामान्य तौर पर, उत्तरी सेमिनरी उदार हो गई, और दक्षिणी सेमिनरी बाइबिल की अचूकता के मुद्दे पर रूढ़िवादी बनी हुई है।

तो, सामान्य तौर पर, आपने उत्तरी सेमिनरी में एक तरह का उदारवादी झुकाव देखा। और यही वह बात थी जिससे ब्रिग्स को पढ़ाते समय कुछ लोग डरते थे। उन्हें डर था कि वह इतना दरवाज़ा खोल रहा है; वह कितना आगे जा रहा था, बाइबल के पूरी तरह से आधिकारिक न होने से पहले दरवाज़ा कितना आगे खुला रहने वाला था? और यही बात लोगों को चिंतित करती थी।

इस बीच, दक्षिणी सेमिनरी और दक्षिणी चर्च इस मुद्दे पर अधिक रूढ़िवादी बने हुए हैं। अब, सवाल यह है कि यह क्यों टूट गया, इसने उत्तर और दक्षिण को क्यों तोड़ दिया? सांस्कृतिक रूप से ऐसा क्या था जिसने उत्तर और दक्षिण को तोड़ दिया? और मेरा संदेह है कि उत्तर में, आपके पास बहुत अधिक विषम समाज था। आपके पास अन्य परंपराओं और इस तरह के कई लोग थे जो इस विषय पर सोचते थे।

मुझे नहीं पता। अगर आप बार्ट एहरमन को तेजी से आगे बढ़ाते हैं, तो क्या आप में से कोई भी कक्षाओं में या बाइबिल अध्ययन कक्षा या पाठ्यक्रम में बार्ट एहरमन के बारे में बात करता है? ठीक है। आप में से कोई और भी बार्ट एहरमन के बारे में बात करता है? अगर आप बार्ट एहरमन को तेजी से आगे बढ़ाते हैं, तो आप समझ सकते हैं कि लोग इतने चिंतित क्यों थे क्योंकि बार्ट एहरमन व्हीटन कॉलेज से स्नातक थे, लेकिन अगर आप उनकी किताब जैसे मिसकॉटिंग जीसस को पढ़ते हैं, उदाहरण के लिए, तो आप देखेंगे कि, ठीक है, मैं इसे इस तरह से रखूंगा।

वह यह नहीं मानता कि बाइबल जो सिखाती है, वह अंतर्निहित है। इसलिए, मैं इसे यहीं छोड़ता हूँ। ठीक है।

तो, हम यहाँ हैं। दो युद्ध रेखाएँ खींची गई थीं, और लोग पक्ष लेने जा रहे थे। और यह डार्विनवाद या दुनिया कैसे बनाई गई, हम ईश्वर और उसकी रचना को कैसे समझते हैं, और यह बाइबल को लेकर है।

बाइबल की असली प्रकृति क्या है? ये दो युद्ध रेखाएँ हैं। ठीक है। क्या इसके बारे में कोई सवाल है? क्या यहाँ आगे बढ़ने से पहले आपके पास इसके बारे में कोई सवाल है? क्या आप ठीक हैं? ठीक है।

अब हम उस चीज़ की ओर बढ़ रहे हैं जिससे आप बहुत परिचित हैं, व्याख्यान संख्या 15 क्योंकि आपने अब तक पुस्तक को दो बार पढ़ा है, शायद, शायद तीन बार, क्योंकि यदि आप सप्ताह में एक अध्याय पढ़ रहे हैं, तो आप इस पुस्तक को पढ़ चुके हैं। आप जानते हैं कि यह पुस्तक अच्छी है। इसलिए, आपको रोशनबुश के बारे में कुछ प्रश्न पूछने में कोई आपत्ति नहीं होगी।

तो, वाल्टर रौशनबुश, वैसे, मुझे अभी इसकी ज़रूरत नहीं है, लेकिन यहाँ वाल्टर रौशनबुश की एक तस्वीर है। तो, हम यहाँ वाल्टर रौशनबुश के साथ तीन काम करने जा रहे हैं। सबसे पहले, हम आपको उनके जीवन के कुछ मुख्य अंश बताना चाहते हैं।

मैं ऐसा करूँगा। मैं दूसरी बात, सामाजिक सुसमाचार के धर्मशास्त्र के बारे में बात करना चाहता हूँ। और फिर तीसरी बात, मैं अमेरिकी ईसाई धर्म में सामाजिक सुसमाचार के योगदान के बारे में बात करना चाहता हूँ।

अब, उनके जीवन के मुख्य अंशों को बताने का यह मतलब बिल्कुल भी नहीं है कि आपको किताब पढ़ने की ज़रूरत नहीं है। और यह जानने के लिए कि आपने किताब को वाकई, वाकई, वाकई ध्यान से, वाकई अच्छी तरह से पढ़ा है, अंतिम परीक्षा में, मुझे किताब से अंतिम परीक्षा में एक हज़ार सवाल मिले, साथ ही किताब से अंतिम परीक्षा पर निबंध भी मिले। तो मुझे पता चल जाएगा कि आपने वह किताब पढ़ी है या नहीं।

लेकिन मैंने सोचा कि रौशनबुश के जीवन के बारे में कुछ बातें बताना मज़ेदार होगा, क्योंकि उनके जीवन और मंत्रालय के बारे में समझे बिना उनके द्वारा शुरू किए गए मंत्रालय को समझना मुश्किल है। इसलिए, हम उनके जीवन से शुरुआत करेंगे। हम कुछ ऐसी चीज़ों से शुरुआत करेंगे जो यहाँ हाइलाइट की गई हैं।

तो, ठीक है, हम रोचेस्टर, न्यूयॉर्क से शुरू करते हैं। रोचेस्टर, न्यूयॉर्क, रौशनबुश के जन्म का स्थान, उनके अधिकांश धार्मिक प्रशिक्षण का स्थान, उनके बाद के जीवन और उनकी मृत्यु का स्थान, रोचेस्टर, न्यूयॉर्क। तो अब, एक व्यक्ति, एक लेखक ने रोचेस्टर, न्यूयॉर्क को जले हुए जिले का दिल कहा है।

और याद रखें कि जले हुए इलाके में क्या हुआ था। यह अपर स्टेट, न्यूयॉर्क से बाहर था। मिलराइट्स वहाँ से निकले थे।

मॉर्मन वहीं से निकले। फिनीइट रिवाइवल वहीं से निकला। अब आपको सामाजिक सुसमाचार के लोग भी वहीं से निकलने लगे हैं, क्योंकि उनका जन्म रोचेस्टर, न्यूयॉर्क में हुआ है।

तो यह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। अब, एक लेखक ने रोचेस्टर, न्यूयॉर्क को पहला अमेरिकी बूमटाउन कहा है। तो, रोचेस्टर, न्यूयॉर्क, जब रौशनबुश का जन्म हुआ, रोचेस्टर, न्यूयॉर्क, एक बहुत, बहुत महत्वपूर्ण जगह थी।

यह वास्तव में एक तेजी से बढ़ता शहर था। और ऐसा इसलिए था क्योंकि रोचेस्टर में आने वाले सभी व्यापार, सभी उद्योग रोचेस्टर तक गए और रोचेस्टर से वापस न्यूयॉर्क शहर और इसी तरह आगे बढ़े। इसलिए, जब हम कहते हैं कि उनका जन्म रोचेस्टर में हुआ था, तो यह मत कहिए कि, वह दूरदराज के इलाके में है।

तो, लड़के, वह ज़रूर होगा, नहीं, वह एक समृद्ध शहर में था, खासकर उसके बाद के वर्षों में। तो, यह वास्तव में, वास्तव में महत्वपूर्ण है, उसका जन्म स्थान। ठीक है।

वहाँ रोचेस्टर थियोलॉजिकल सेमिनरी नामक एक सेमिनरी थी। यहीं पर उन्होंने प्रशिक्षण लिया था, रोचेस्टर थियोलॉजिकल सेमिनरी में। इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है।

तो, यह एक बैपटिस्ट सेमिनरी थी, और उसे प्रशिक्षित किया गया था; वैसे, उसके पिता बैपटिस्ट सेमिनरी में शिक्षक थे। यहीं पर उसे प्रशिक्षित और शिक्षित किया गया था। अब सेमिनरी ही, लंबी कहानी को संक्षेप में कहें तो, सबसे पहले, परिवार ही, और फिर सेमिनरी ही।

यह परिवार खुद एक जर्मन भाषी परिवार था। यह जर्मन पृष्ठभूमि से था। आप इस पृष्ठभूमि के बारे में किताब में पढ़ सकते हैं।

आप शायद मुझे अभी उस पृष्ठभूमि के बारे में सब कुछ बता सकते हैं। लेकिन यह एक जर्मन भाषी परिवार से है। सेमिनरी भी एक जर्मन भाषी सेमिनरी थी।

यह एक द्विभाषी सेमिनरी थी। पाठ्यक्रम जर्मन और अंग्रेजी में पढ़ाए जाते थे क्योंकि वे द्विभाषी थे। इसलिए, परिवार, चर्च, सेमिनरी, सब कुछ द्विभाषी है।

ठीक है। अब, जब आप किताब पढ़ेंगे, तो आप देखेंगे कि रौशनबुश ने जर्मनी की कई यात्राएँ कीं। तो, ऐसा लगता है कि वह कुछ समय के लिए अमेरिका और जर्मनी के बीच दोहरी नागरिकता रखता था, न केवल पारिवारिक कारणों से बल्कि शैक्षिक कारणों से भी।

तो इससे आपको पता चलता है कि यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जो अंग्रेजी और जर्मन दोनों में प्रशिक्षित है, लेकिन यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जो न केवल अमेरिकी परिदृश्य को समझने वाला है, बल्कि वह जर्मन धर्मशास्त्र को भी समझने वाला है। और वह यह समझने वाला है कि जर्मन धर्मशास्त्र, श्लेयरमाकर जैसे लोगों को अमेरिकी तरह के धर्मशास्त्रीय पादरी परिदृश्य में कैसे लागू किया जाए। तो, यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जो दो दुनियाओं में बहुत सहज है।

यह अमेरिकी जीवन और संस्कृति तथा अमेरिकी चर्च पर उनके प्रभाव के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए, आपको इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। वह अंग्रेजी और जर्मन में लिखते थे, अंग्रेजी और जर्मन में बोलते थे, इत्यादि।

ठीक है। रौशनबुश के बारे में एक और बात, 1886 उनके जीवन की एक महत्वपूर्ण तारीख है। और वह इतनी महत्वपूर्ण तारीख क्यों है, 1886? 1886 इतना महत्वपूर्ण क्यों है? क्या आप मुझे बता सकते हैं कि पहली बार जब आपने किताब पढ़ी, दूसरी बार जब आपने किताब पढ़ी, या तीसरी बार जब आपने किताब पढ़ी, 1886, उनके जीवन में इतना महत्वपूर्ण क्यों है? क्या कोई यहाँ अनुमान लगाना चाहता है? आपका दिल आशीर्वादित हो।

हाँ। उन्होंने 1886 में अपना मंत्रालय शुरू किया। 1886 में, वे न्यूयॉर्क शहर चले गए।

न्यूयॉर्क शहर में एक जर्मन-भाषी बैपटिस्ट चर्च था जिसे पादरी की ज़रूरत थी। वह उस चर्च में पादरी बनने के लिए न्यूयॉर्क शहर चले गए। मैंने वह चर्च देखा है।

मैं वास्तव में कभी उस चर्च के अंदर नहीं गया। लेकिन मैंने उस चर्च का मुखौटा देखा है। और आज भी इसे रौशनबुश चर्च कहा जाता है।

तो, वह 1886 में उस चर्च में मंत्री बनने के लिए गया। और वह 11 साल तक वहाँ रहा। तो, वह 1886 से 1897 तक वहाँ रहा।

ठीक है। अब, चर्च का स्थान वास्तव में महत्वपूर्ण है। इसलिए, आपको इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

खैर, आप मुझे बताइए, चर्च कहाँ स्थित था? न्यूयॉर्क शहर में चर्च कहाँ स्थित था? यह सिर्फ़, आप जानते हैं, यहाँ कोई नहीं था? ठीक है। यह न्यूयॉर्क के पूर्वी हिस्से में स्थित था। तो, मुझे खेद है, न्यूयॉर्क शहर के पश्चिमी हिस्से में एक जगह पर स्थित है, अब यह आपको पड़ोस के बारे में कुछ संकेत देने वाला है।

लेकिन विडंबना यह है कि आज भी उस शीर्षक का इस्तेमाल किया जाता है, जबकि पड़ोस में एक जगह थी, कोई जानता है? एक जगह जिसे हेल्स किचन कहा जाता था। हेल्स किचन। यहीं वह रहने चले गए।

हेल्स किचन। आज भी इसे हेल्स किचन के नाम से ही जाना जाता है। तो यह होगा। क्या इससे आपको पड़ोस, हेल्स किचन के बारे में कुछ पता चलता है? मैं हेल्स किचन में सेवा करने जा रहा हूँ।

तो यहाँ वह कहाँ जाता है। और वह 11 साल से वहाँ है और हेल्स किचन में इस बैपटिस्ट चर्च में मंत्रालय है। ठीक है।

अब, वह हेल्स किचन में अपने पैरिशियन के बीच क्या पाता है? वह अपने पैरिशियन के बीच, बहुत मेहनती लोगों को पाता है। स्वाभाविक रूप से, वे पिता, माता, बच्चों और मेहनती लोगों के साथ कारखानों में काम कर रहे हैं, लेकिन लोग मुश्किल से अपना जीवन यापन कर पा रहे हैं। लोग गरीबी और कभी-कभी अत्यधिक गरीबी में रहते हैं।

और इसलिए, वह, यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में उसे कभी पता नहीं था क्योंकि वह एक बहुत ही मध्यम वर्गीय, प्यारे घर, प्यारे चर्च, प्यारे सेमिनरी में पला-बढ़ा था। यह कुछ ऐसा है जिसका उसने अपने जीवन में कभी अनुभव नहीं किया था। और वह बहुत, यह उस पर बहुत गहरा और बहुत स्थायी प्रभाव डालता है।

अत्यधिक गरीबी, लोगों का दुख, लोगों को हर समय कठिन परिश्रम करना पड़ता था, इत्यादि। तो अब, तो वह, वह एक तरह से, वह एक तरह से कुछ ऐसा करने जा रहा है जो बहुत महत्वपूर्ण होने जा रहा है। लेकिन ऐसा करने से पहले, हमें इन 11 वर्षों के दौरान, और वास्तव में अपने शेष जीवन के दौरान, इन 11 वर्षों के दौरान, वह खुद को एक इंजीलवादी मानता है।

और यह बात उसके जीवन के बाकी समय के लिए भी सच रहेगी। वह इंजील शब्द का इस्तेमाल करने से नहीं कतराएगा। ठीक है।

और आप देखेंगे कि इवांस उसे इंजीलवादी कहते हैं। इवांस उसे इंजीलवादी कहते हैं। इसलिए, हेल्स किचन में उसके मंत्रालय में जो कुछ भी होता है, जो कुछ भी होता है, वह किसी भी तरह से उसकी इंजीलवादी जड़ों और उसके इंजीलवादी विश्वासों और इसी तरह की अन्य बातों को कम नहीं करेगा।

अब, इसका एक उदाहरण जो हम पहले ही बता चुके हैं, वह यह है कि वह ड्वाइट एल. मूडी का मित्र था। तो, आपको उस दोस्ती पर ध्यान देने की ज़रूरत है। वह ड्वाइट एल. मूडी का मित्र है, जो रौशनबुश के समय का एक महान इंजील प्रचारक था।

वह नॉर्थफील्ड जाता है। और याद है नॉर्थफील्ड में क्या हो रहा था? वह कभी-कभी नॉर्थफील्ड क्यों जाता है? वह नॉर्थफील्ड क्यों जाता है? इसके अलावा, वह मूडी का घर था। लेकिन मूडी के

निर्देशन में नॉर्थफील्ड में जो हो रहा था वह कुछ पुनरुद्धार बैठकें थीं, लेकिन नॉर्थफील्ड में कुछ और भी महत्वपूर्ण हो रहा था।

नॉर्थफील्ड में और क्या हो रहा है? मूडी नॉर्थफील्ड में गर्मियों में बाइबल सम्मेलन आयोजित कर रहे हैं। इनमें शास्त्रों, खास तौर पर भविष्यवक्ताओं पर विचार किया जाता है और देखा जाता है कि यह उस दुनिया से कैसे संबंधित है जिसमें हम रह रहे हैं। इसलिए, गर्मियों में होने वाले सम्मेलन इंजील बाइबल सम्मेलन थे और कभी-कभी, रौशनबुश मूडी से मिलने आते थे और उन गर्मियों में होने वाले बाइबल सम्मेलनों में जाते थे।

तो यह वाकई बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि उसके जीवन में जो कुछ भी होने वाला है, वह उसके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अब, हम यह भी ध्यान रखना चाहते हैं कि मुझे आपको एक ब्रेक देना है। आखिरकार, यह उसका शुक्रवार है।

लेकिन हम यह भी ध्यान रखना चाहते हैं कि अब उनके जीवन में आगे जो भी होने वाला है, वह बैपटिस्ट ही रहेंगे। इसलिए, संप्रदायिक संबद्धता के संदर्भ में, वह बैपटिस्ट ही रहेंगे। ठीक है।

अब, ऐसा इसलिए है क्योंकि इसके पीछे एक धार्मिक कारण है। तो, चलिए इसे नीचे ले आते हैं, और फिर मैं आपको एक विराम देता हूँ। ऐसा इसलिए है क्योंकि रौशनबुश को यकीन था कि बैपटिस्ट और मेथोडिस्ट, इसलिए वह मेथोडिस्ट नहीं थे, लेकिन मेथोडिस्ट को पसंद करते थे, लेकिन उन्हें यकीन था कि बैपटिस्ट और मेथोडिस्ट वे समूह थे जो आदिम ईसाई धर्म को सबसे अच्छी तरह से बनाए रखते थे या आदिम ईसाई धर्म को सबसे अच्छी तरह से व्यक्त करते थे।

और आदिम ईसाई धर्म से हमारा क्या मतलब है? बस हमें याद दिलाइए कि हम इससे क्या मतलब रखते हैं। ईसाई धर्म, पहली सदी, दूसरी सदी, आरंभिक चर्च, नया नियम, आरंभिक चर्च ईसाई धर्म। उन्हें लगा कि बैपटिस्ट और मेथोडिस्ट आदिम ईसाई धर्म और उसके बारे में सबसे अच्छी तरह से व्यक्त करते हैं। और मुझे यहाँ यह कहना है कि वे आलोचनात्मक थे।

वह पदानुक्रमित चर्चों के आलोचक थे। वह रोमन कैथोलिक धर्म और पूर्वी रूढ़िवादी धर्म के आलोचक थे क्योंकि उन्हें लगता था कि पदानुक्रमित चर्च आदिम ईसाई धर्म की सबसे अच्छी अभिव्यक्ति नहीं थे। उन्होंने यह भी महसूस किया कि पदानुक्रमित, नौकरशाही चर्च कभी-कभी लोकतांत्रिक समाज में चर्च के विकास के रास्ते में खड़े होते हैं।

इसलिए, वह एक लोकतांत्रिक समाज, एक लोकतांत्रिक दुनिया में रह रहे हैं। लोगों ने शासन किया, और उन्हें मेथोडिज्म और बैपटिस्ट चर्च पसंद थे क्योंकि यह वहाँ सच था। यह आदिम ईसाई धर्म की सबसे अच्छी अभिव्यक्ति है, जबकि पदानुक्रमित चर्च एक लोकतांत्रिक समाज में फिट नहीं होते, उनके विचार में।

तो, अमेरिका में चर्च में जो कुछ भी किया जाना था, वह बैपटिस्ट और मेथोडिस्ट द्वारा किया जाने वाला था। तो, ठीक है, तो रौशनबुश। तो, वहाँ, तो हम, ठीक है, तो हमने उसे यहाँ शुरू किया।

हम कुछ मिनटों में, कुछ मिनटों में, नहीं, 10 सेकंड में उसके साथ जारी रखेंगे। आपके पास 10 सेकंड हैं। वाल्टर रौशनबुश, कुछ और तरह की चीजें जो आप पहले से ही जानते हैं, लेकिन मैं बस आपकी मदद कर रहा हूँ, मैं उन पर जोर देने में मदद कर रहा हूँ, लेकिन आप उन्हें पहले से ही किताब से जानते हैं।

ठीक है। ठीक है। सड़ा हुआ रौशनबुश।

वह एक समूह बनाता है, और समूह पर ध्यान देना बहुत महत्वपूर्ण है। और समूह, आप इसे देख सकते हैं, समूह का नाम आपके जीवनकाल में फिर से, और इसे ब्रदरहुड ऑफ़ द किंगडम कहा जाता है। यह समूह का नाम है, ब्रदरहुड ऑफ़ द किंगडम।

ठीक है। अब, ब्रदरहुड ऑफ़ द किंगडम का गठन रौशनबुश ने किया था, जो पड़ोस में अन्य बैपटिस्ट प्रचारकों, पादरियों और साथ ही पड़ोस में अन्य सहानुभूति रखने वाले ईसाइयों के साथ मिलकर काम करता है। और वे चिंतित होने जा रहे हैं, और उनका ध्यान सामाजिक चिंताओं पर होगा क्योंकि हम यहाँ ऐसे लोगों से निपट रहे हैं जो गरीबी और अन्य स्थितियों में हैं।

वे इन लोगों के जीवन के लिए सामाजिक रूप से चिंतित होंगे, जिन लोगों की वे सेवा कर रहे हैं। ठीक है। अब हमें इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है, यह बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए आपको इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

इसका मतलब यह नहीं है कि रौशनबुश और ये लोग आध्यात्मिक रूप से लोगों की सेवा करना बंद कर देते हैं। इसका मतलब यह नहीं है। इसलिए वे चिंतित थे, और इसलिए यहाँ एक उद्धरण है: वह और दूसरे पादरी अभी भी आध्यात्मिक जीवन, पाप, भ्रष्टाचार और मोक्ष, पवित्रता और अनन्त जीवन की संभावना में विश्वास करते थे।

इसलिए, वह अभी भी विश्वास करता था और अभी भी प्रचार करता था, और उन्होंने भी ऐसा ही किया। ब्रदरहुड ऑफ़ किंगडम से जुड़े लोग अभी भी इस सुसमाचार संदेश पर विश्वास करते थे और प्रचार करते थे। लेकिन उन्हें लगा कि सुसमाचार संदेश का यही अंत नहीं था क्योंकि सुसमाचार में लोगों के लिए सामाजिक सरोकारों, गरीबों की देखभाल और गरीबों के लिए न्याय के बारे में भी कुछ कहना था। इसलिए, ब्रदरहुड ऑफ़ किंगडम का गठन उस देखभाल और चिंता को प्रदर्शित करने के लिए किया गया है।

तो यहाँ दो उदाहरण दिए गए हैं कि उन्होंने अपने पड़ोस में क्या-क्या हासिल किया। और पहला उदाहरण कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी, और दूसरा उदाहरण भी आश्चर्यचकित कर सकता है। लेकिन जिन दो चीज़ों के लिए उन्होंने मेहनत की, वे थीं बेहतर आवास, और मैंने लोअर ईस्ट साइड टेनमेंट म्यूज़ियम का ज़िक्र किया, जिसे आप सभी न्यूयॉर्क शहर में आने पर किसी दिन ज़रूर देखने जाएंगे।

बेहतर आवास क्योंकि ये लोग जिस आवास में रहते थे वह दयनीय था। और दूसरी चीज़ जिसके लिए उन्होंने काम किया, वह थी, हमारे लिए, हम इसके बारे में नहीं सोचेंगे, मुझे नहीं लगता,

लेकिन बच्चों के लिए बेहतर खेल के मैदान। क्यों? क्योंकि बच्चों के लिए खेल का मैदान क्या था? यह न्यूयॉर्क की उन व्यस्त सड़कों पर था।

वह उनका खेल का मैदान था। वह एकमात्र जगह थी जहाँ उन्हें खेलना था। इसलिए आप यह नहीं सोचेंगे कि ईसाई लोग बैठकर यह कह रहे होंगे कि, बेटा, हमें इन बच्चों के लिए कुछ खेल के मैदान बनाने होंगे ताकि जब वे बाहर खेलें तो उन्हें कोई खतरा न हो।

लेकिन उनके लिए, यह बहुत महत्वपूर्ण था। और ध्यान दें, वैसे, शीर्षक, ब्रदरहुड ऑफ़ द किंगडम, शीर्षक में अंतर्निहित राज्य, बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि रौशनबुश का धर्मशास्त्र एक राज्य धर्मशास्त्र था। इसलिए, ब्रदरहुड ऑफ़ द किंगडम, नाम ही यहाँ महत्वपूर्ण है।

इसलिए, उन्होंने इन अन्य लोगों के साथ मिलकर 11 साल तक किंगडम के इस ब्रदरहुड के साथ काम किया। अब, 11 साल बाद, वह 1897 में रोचेस्टर में अपने घर वापस चले गए। ठीक है, आपने जीवनी पढ़ ली है।

मुख्य कारण क्या है कि वह, मेरा मतलब है, जाहिर है, रोचेस्टर, न्यूयॉर्क में वापस जाकर मंत्रालय करेगा, और वह वापस जाकर सेमिनरी में काम करेगा और इसी तरह के अन्य काम करेगा? लेकिन मुख्य कारण क्या है कि उसने घर जाने का फैसला क्यों किया? अब उसके पास पत्नी और परिवार है और इसी तरह के अन्य काम हैं। उसने वहाँ 11 साल तक मंत्रालय किया है।

उसने सोचा कि शायद वह अपनी बाकी की ज़िंदगी वहीं बिता देगा। उसने घर जाने का फैसला क्यों किया, इसकी मुख्य वजह क्या थी? कोई ऐसा व्यक्ति जिसने जीवनी पढ़ी हो, मुझे यह बता सकता है। जीवनी पढ़ने से आपको यह पता चल जाएगा।

कोई है? क्या मुझे नाम पुकारना चाहिए? नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा। कोई है? नहीं। मुख्य कारण शारीरिक कारण था।

रौशनबुश बहरे हो रहे थे। और रौशनबुश, यह उनके जीवन की एक त्रासदी थी। वह बहरे हो रहे थे, और उन्हें लगा कि वह अपनी सुनने की क्षमता के कारण पादरी का काम जारी नहीं रख सकते।

और इसलिए, उन्होंने फैसला किया कि वह घर वापस बैपटिस्ट सेमिनरी से बुलावा स्वीकार करेंगे, और वह वापस जाकर बैपटिस्ट सेमिनरी में पढ़ाएंगे। हालाँकि, यह त्रासदी, एक तरह से, उनके जीवन में, भगवान के लिए उपयोगी साबित हुई क्योंकि वह न्यूयॉर्क शहर में रहने की तुलना में कहीं अधिक प्रभावशाली बन गए। क्योंकि जब वह घर वापस आए और जब वह सेमिनरी के प्रोफेसर थे और यहां तक कि भाषण देने के लिए भी गए, और आपने किताब में पढ़ा, लेकिन कभी-कभी भाषण देने के लिए उनके साथ कोई दुभाषिया नहीं होता था, लेकिन उनके साथ कोई ऐसा व्यक्ति होता था जो लोगों को यह समझने में मदद कर सकता था कि वह क्या कह रहे थे और अगर उनके पास कोई सवाल था, तो वह उनसे कह सकती थी, ये रहे सवाल।

तो, उन्हें मदद मिली। लेकिन जो हुआ वह यह है कि अपनी मृत्यु तक के वर्षों में, रौशनबुश ने बहुत अधिक लेखन, उपदेश और शिक्षण किया। वह अमेरिकी ईसाई धर्म पर एक तरह से बेहद प्रभावशाली है जो शायद उस कमी के बिना नहीं होता।

इसलिए, एक लेखक ने उन्हें अपनी पीढ़ी में अमेरिकी ईसाई विचारों का सबसे प्रमुख निर्माता कहा है। इसलिए, रौशनबुश 20वीं सदी की शुरुआत में हैं, वे 20वीं सदी की शुरुआत में वही हैं जो शायद कॉटन माथेर पहले थे, या एडवर्ड्स 18वीं सदी में थे, या फ़िनी 19वीं सदी में थे। अब हमारे पास 20वीं सदी में रौशनबुश हैं जो ईसाई विचारों के असली निर्माता हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है।

इसलिए, वे वहाँ वापस चले गए और अपना शेष जीवन उस मंत्रालय में बिताया और 1918 में रोचेस्टर, न्यूयॉर्क में उनकी मृत्यु हो गई, जो कि एक बहुत ही महत्वपूर्ण तिथि थी, क्योंकि प्रथम विश्व युद्ध अभी शुरू ही हुआ था, जब उनकी मृत्यु हुई। इसलिए अब जब वे घर वापस आए तो उन्होंने एक और काम किया कि उन्होंने रोचेस्टर को कुछ इस तरह बनाया जैसे कैल्विन ने जिनेवा को बनाया था, एक ऐसा उदाहरण शहर जो ईसाई धर्म के सार्वजनिक नीति पर प्रभाव डालने का एक उदाहरण हो। और रोचेस्टर में उनकी बहुत सराहना की गई।

उन्होंने रोचेस्टर में कभी कोई राजनीतिक पद नहीं संभाला, लेकिन रोचेस्टर शहर में सार्वजनिक नीति पर धार्मिक आवाज़ उठाने के लिए उनकी बहुत सराहना की गई। इसलिए रोचेस्टर वास्तव में एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान बन गया, जहाँ रौशनबुश ने एक मॉडल के रूप में काम किया कि कैसे ईसाई धर्म व्यापक संस्कृति को प्रभावित कर सकता है और कैसे ईसाई धर्म सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक परिवर्तन आदि ला सकता है। यह बहुत प्रभावशाली है, और मैं हमेशा कैल्विन के जिनेवा को कुछ हद तक उसी तरह से सोचता हूँ।

ठीक है, तो सबसे पहले, उनके जीवन के बारे में कुछ बातें। तो आपको उनके जीवन के बारे में बहुत कुछ पता चल जाएगा, या आप उनके जीवन के बारे में बहुत कुछ जान जाएँगे। मैंने जीवनी पर इवान का व्याख्यान सुना है, इसलिए लेखक का व्याख्यान सुनना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी।

लेकिन क्या अभी तक उनके जीवन के बारे में कोई सवाल है? हमें शुक्रवार के सत्रों में पाठ्यपुस्तक से निश्चित रूप से प्रश्न मिलेंगे, लेकिन हमने अब तक रौशनबुश के जीवन के बारे में जो कुछ भी कहा है? हाँ, उनका पारिवारिक जीवन बहुत अच्छा था। वह शादीशुदा थे, उनके तीन या चार बच्चे थे, उनका पारिवारिक जीवन बहुत अच्छा था। जब हम अमेरिका में ईसाई धर्म में सामाजिक सुसमाचार के योगदान पर पहुँचेंगे, तो हम देखेंगे कि वह परिवार को उसी तरह देखते थे जैसे परिवार के बारे में उनकी राय बहुत ऊँची थी।

उन्होंने परिवार को अमेरिकी लोकतंत्र की नींव के रूप में देखा, और उनका पारिवारिक जीवन भी उसी तरह का था। तो, अपनी पत्नी, बच्चों और अन्य लोगों के साथ एक बहुत ही स्वस्थ पारिवारिक जीवन, हाँ। और जब हम सामाजिक सुसमाचार के योगदान के बारे में बात करेंगे तो हम वास्तव में इसके बारे में थोड़ा और बात करेंगे।

रौशनबुश के बारे में कुछ और? क्या आप उनके बारे में कुछ और सोच सकते हैं? वाल्टर रौशनबुश एक बहुत ही उल्लेखनीय व्यक्ति थे, इसमें कोई संदेह नहीं है। आगे बढ़ो, एरन, और फिर मैं वापस आऊंगा। हाँ, यह एक अच्छा सवाल है।

मैं कहूंगा कि उनके पिता का सबसे बड़ा प्रभाव उनके बेटे के माध्यम से था क्योंकि वे वाल्टर के शिक्षक, उनके प्रोफेसर, उनके गुरु, उनके मार्गदर्शक, इत्यादि थे। इसलिए, मैं कहूंगा कि भले ही उनका खुद का प्रभाव न रहा हो, मेरा मतलब है, उन्होंने अपना पूरा जीवन रोचेस्टर में बिताया और बैपटिस्ट सेमिनरी में पढ़ाया, लेकिन जबकि उनका खुद का दुनिया भर में उस तरह का प्रभाव नहीं था जैसा उनके बेटे का था, वाल्टर पर उनका प्रभाव था। इसलिए, दूसरी पीढ़ी में आना, वास्तव में महत्वपूर्ण है।

मुझे लगता है कि उन्होंने जो सबसे महत्वपूर्ण योगदान दिया, वह संभवतः वाल्टर के माध्यम से था। हाँ। इसके बाद उन्हें प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, और प्रतिरोध का कारण यह था कि दूसरी पीढ़ी के कई सामाजिक सुसमाचार प्रचारकों ने इंजील ईसाई धर्म और सामाजिक सुसमाचार आंदोलन के बीच वह संतुलन बनाए नहीं रखा जो रौशनबुश ने बनाए रखा था।

उन्होंने इंजील संबंधी बातों को छोड़ दिया और सामाजिक सुसमाचार संबंधी बातों पर ध्यान केंद्रित किया। और इसलिए दूसरी पीढ़ी में सामाजिक सुसमाचार संबंधी बातें बहुत महत्वपूर्ण हो गईं। उन्होंने अपने जीवनकाल में कुछ हद तक ऐसा महसूस करना शुरू कर दिया था, लेकिन बाद में ऐसा नहीं हुआ।

हाँ। वाल्टर रौशनबुश के बारे में कुछ और भी है। और वैसे, उन्होंने विलियम बूथ से मिलने के लिए इंग्लैंड की यात्रा भी की, जो साल्वेशन आर्मी के संस्थापक थे, क्योंकि धार्मिक रूप से और सामाजिक मंत्रालय के मामले में भी उनके बीच बहुत समानता थी।

तो, रौशनबुश के बारे में और कुछ? ठीक है। चलो कम से कम शुरू करते हैं, धर्मशास्त्र, अरे नहीं, हम धर्मशास्त्र से पहले यहाँ उनके कामों पर चर्चा करेंगे। तो हम सबसे पहले वाल्टर रौशनबुश के कामों पर चर्चा करेंगे, ए के तहत, यहाँ उनके जीवनकाल के तहत।

ठीक है। हाँ। चलो शुरू करते हैं।

मुझे नहीं पता कि मैंने ऐसा क्यों किया, लेकिन यह तो हो गया। ठीक है। यहाँ शांति से आराम करो।

मैंने ब्रदरहुड ऑफ द किंगडम भी लिखा है। तो अगर आप उसे देखना चाहते हैं, तो वह वहाँ है। ठीक है।

और दाईं ओर मेरा छोटा सा कार्टून देखिए। वहाँ कोई मेहनत कर रहा है। क्या आपने देखा, मैंने वास्तव में इसे कहीं से ढूँढा और वहाँ लगाया।

मेरे लिए यह बहुत उल्लेखनीय है। मेरे लिए, यह एक कदम है, और यह एक बड़ा कदम है कि मैं ऐसा कार्टून पा सका, कोई व्यक्ति मेहनत कर रहा है और वाल्टर के बगल में सब कुछ। तो, यह सब Google से है।

तो, ठीक है। तो, वाल्टर रौशनबुश के बारे में क्या? और फिर हम धर्मशास्त्र में उतरेंगे। हम यहाँ उनके कामों में हैं।

ठीक है। सबसे पहले, उन्होंने बहुत कुछ लिखा, और फिर, ज़ाहिर है, उनका अनुवाद किया गया। तो, पहला वास्तव में, वास्तव में, वास्तव में महत्वपूर्ण कार्य ईसाई धर्म और सामाजिक संकट है, जिसे उन्होंने 1907 में लिखा था।

ईसाई धर्म और सामाजिक संकट। यह एक प्रमुख पुस्तक थी। और उन्होंने इस पुस्तक में जो किया वह यह था कि उन्होंने सामाजिक सुसमाचार का इतिहास दिया क्योंकि 1907 तक, वे सामाजिक सुसमाचार के पिता के रूप में जाने जाते थे।

तो, लोगों द्वारा सोशल गॉस्पेल शब्द का इस्तेमाल शुरू हो गया था। क्या आपको याद है कि हमने वाशिंगटन ग्लैडेन का नाम लिया था? वाशिंगटन ग्लैडेन एक पादरी थे और उन्होंने सोशल सॉल्यूशन शब्द का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था।

तो, यह किसी तरह से नहीं हुआ, लेकिन सामाजिक सुसमाचार शब्द ने इसे लिया। उन्होंने 1907 में ईसाई धर्म और सामाजिक संकट पर यह पुस्तक लिखी। और यह पुस्तक सामाजिक सुसमाचार का इतिहास बताती है।

तो, ठीक है। मैं इस पुस्तक के बारे में बस पाँच बातें बताने जा रहा हूँ क्योंकि आप इस पुस्तक को गर्मियों तक नहीं पढ़ पाएँगे। फिर गर्मियों में आप इस पुस्तक को पढ़ेंगे।

तो, तब आपको पता चल जाएगा, लेकिन आप इसे इस गर्मी तक नहीं पढ़ेंगे। तो, मैं इसके बारे में पाँच बातें बताने जा रहा हूँ, जो आपको वाल्टर रौशनबुश को समझने में मदद करेंगी और सामाजिक सुसमाचार के धर्मशास्त्र में आगे बढ़ने में आपकी मदद करेंगी। सामाजिक सुसमाचार का इतिहास।

उनके लिए इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण हैं पुराने नियम के भविष्यवक्ता। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को याद रखें। और याद रखें कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं का क्या संबंध था।

वे गरीबों के लिए चिंतित थे। वे विधवाओं के लिए चिंतित थे। वे अनार्यों के लिए चिंतित थे।

वे हाशिए पर पड़े लोगों के लिए चिंतित थे। यह पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के लिए था, जिन्होंने हमें दिखाया कि एक न्यायपूर्ण दुनिया क्या होने जा रही थी और यह सब क्या होना चाहिए। इसलिए, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं से ही इतिहास शुरू होता है।

और वहाँ भविष्यवक्ताओं के बारे में बहुत कुछ है। ठीक है। नंबर दो, किताब में दूसरी बात, वह फिर यीशु की सामाजिक शिक्षाओं की ओर बढ़ता है।

इसलिए, वह गरीबों के लिए यीशु की चिंता, बीमारों के लिए यीशु की चिंता, विधवाओं और अनाथों के लिए यीशु की चिंता को दर्शाता है। इसलिए, वह निश्चित रूप से यीशु के बारे में और यीशु के सामाजिक नामों के बारे में बहुत कुछ बात करता है। तो यह पुस्तक में नंबर दो है।

ठीक है। पुस्तक में तीसरा नंबर है यीशु के बाद से, पहली शताब्दी के बाद से, यीशु के जीवन और यीशु के मंत्रालय के बाद से, चर्च द्वारा इस तरह की चिंताओं में बड़ी गिरावट आई है। अब, इतिहास में ऐसे दौर थे, बेशक, जहाँ यह सच नहीं है।

लेकिन मूल रूप से, जब वह चर्च के इतिहास को देखता है, तो वह कहता है कि चर्च की सामाजिक शिक्षाएँ बहुत कमज़ोर हो गई हैं, और चर्च ने गरीबों, विधवाओं, अनाथों, बीमारों की देखभाल नहीं की है। उसने ऐसा नहीं किया है। और इसलिए यह पुस्तक में तीसरे नंबर पर है, चर्च में सामाजिक नामों का पतन।

ठीक है। पुस्तक में चौथा अंक वर्तमान संकट का है। वर्तमान संकट क्या है जिसके साथ हम जी रहे हैं? और हां, वह 11 साल तक नर्क की रसोई में रहा था।

तो, वर्तमान संकट जिसमें हम रह रहे हैं, वह यह है कि चर्च ने गरीबों की जरूरतों के प्रति आंखें मूंद ली हैं। चर्च चिंतित नहीं है, परवाह नहीं करता। अभी, जिस दुनिया में हम रह रहे हैं, 1907 में, मैं रोचेस्टर से लिख रहा हूँ; मैं आपको बता रहा हूँ, हेल्स किचन में 11 साल बिताने के बाद, एक निकाय के रूप में चर्च गरीबों के लिए खुद को चिंतित नहीं करता है।

और इसलिए वह इस पर विस्तार से बताते हैं। तो, ठीक है। और फिर किताब में पाँचवाँ नंबर।

पुस्तक में पाँचवाँ नंबर एक उद्धरण है, अध्याय का शीर्षक है, लेकिन क्या करें, क्या करें। हम इसके बारे में क्या करने जा रहे हैं? और यही ईसाई धर्म और सामाजिक संकट की चुनौती थी। यही पुस्तक की चुनौती थी।

अब, याद रखें कि जब वह यह किताब लिख रहे थे, तो वह रोचेस्टर में भी यह सब पढ़ा रहे थे, लेकिन वह दुनिया के कई स्थानों पर भी गए थे, मुख्य रूप से अंग्रेजी दुनिया और जर्मन दुनिया में, लेकिन दुनिया के कई स्थानों पर, वह यह भी पढ़ा रहे थे। तो, यह ईसाई और सामाजिक संकट बहुत प्रसिद्ध हो रहा है। ठीक है।

बहुत महत्वपूर्ण है। आप अपने जीवनकाल में इस पुस्तक को फिर से देख सकते हैं, ईसाई धर्म और सामाजिक संकट। क्या पुस्तक के बारे में कोई प्रश्न हैं? आप पुस्तक के पाँच मुख्य क्षेत्रों को देखते हैं, और आप समझ जाएंगे कि वह सामाजिक सुसमाचार को रेखांकित करने के बारे में इतना चिंतित क्यों है।

ठीक है। इसके साथ ही, मैं दूसरे विषय का भी उल्लेख करना चाहूँगा, सामाजिक सुसमाचार के लिए धर्मशास्त्र। ठीक है।

सामाजिक सुसमाचार के लिए धर्मशास्त्र। ठीक है। और बस इतना ही कहना है कि, सामाजिक सुसमाचार के धर्मशास्त्र के साथ, वह एक विशेष विषय का उपयोग करने जा रहा है जिसे वह सामाजिक सुसमाचार के लिए केंद्रीय मानता है।

इसलिए वह एक महत्वपूर्ण विषय विकसित करने जा रहे हैं। अगर हम सामाजिक सुसमाचार को समझना चाहते हैं तो हमें इस विषय को विकसित करने की आवश्यकता है। उन्होंने इसे 1917 में लिखा था।

तो पहले मैंने कहा था कि उनकी मृत्यु 1918 में हुई। मुझे लगता है कि मैंने पहले गलती से कहा था कि उनकी मृत्यु प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत में हुई थी। नहीं, वह प्रथम विश्व युद्ध में जीवित रहे, लगभग जीवित रहे, क्योंकि प्रथम विश्व युद्ध 1914 में शुरू हुआ था। तो यह मेरी गलती थी।

वे प्रथम विश्व युद्ध के पहले तीन वर्षों तक जीवित रहे, और उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध की तबाही देखी। फिर, बेशक, 1918 में उनकी मृत्यु हो गई, और यह प्रथम विश्व युद्ध का अंत था। तो, ठीक है। सामाजिक सुसमाचार का धर्मशास्त्र। हम इसे सोमवार की सुबह शुरू करेंगे।

आपका सप्ताहांत बहुत अच्छा रहे, और हम आपसे सोमवार की सुबह मिलेंगे।

यह डॉ. रोजर ग्रीन हैं जो अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपना व्याख्यान दे रहे हैं। यह सत्र 19 है, अमेरिका में सामाजिक सुसमाचार।